अध्याय नौ

महेन्द्र शास्त्री

[महेन्द्र शास्त्री के जन्म सीवान जिला के रतनपुरा गाँव में भइल रहे । संस्कृत माध्यम से उच्च शिक्षा पवला का बाद इहाँ का आजादी के लड़ाई में भाग लिहनी आ जेलो गइनी । इहाँ के साहित्य सामाजिक सरोकार से जुड़ल बा । शास्त्री जी भोजपुरी आन्दोलन के अगुआ आ बड़हन शिक्षाविद् रहीं । इहाँ के हिन्दी, संस्कृत के विद्वान रहीं । भोजपुरी में इहाँ के सैकड़न कविता आ गीत प्रकाशित बा । इहाँ के कविता संग्रह के नाँव बा- 'चोखा', 'धोखा', 'प्रदीप' ।]

उत्थान

आज आकाश में भी बथान भइल रे ।
चान सूरज पर आपन मकान भइल रे ।

रोज विज्ञान के ज्ञान बढ़ते गइल,
लोग ऊँचा-से-ऊँचा पर चढ़ते गइल,
आज सगरे आ सबकर उत्थान भइल रे-

जबले हमनी के मनवाँ छोटा रहल
तबले सब लो के मनवाँ खोटा रहल
आज हमनी के मनवाँ महान भइल रे-

फेर ए देस के माँथ ऊँचा भइल
फेर ई देस नीमन समूचा भइल
बूढ़ भारत अब सब से जवान भइल रे-

मन में सेवा के हमरा अथाह चाह बा,
हमरा पुरुखन के ईहे पुरान राह बा
आज हमनी का ओही के ध्यान भइल रे-

आज सबसे बड़ा सब किसान भइल रे
आज सबका से इहे प्रधान भइल रे
किन्तु आनन्द सबका समान भइल रे...

मन के अरमान अपना पूरा भइल,
आज बापू के सपना पूरा भइल
आज हमनी के छाती उतान भइल रे-

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उत्थान के रचनाकार के नाँव बताईं ?
2. महेन्द्र शास्त्री. कवना जिला के रहीं ?
3. कवि का अनुसार आज सबसे बड़ के भइल बा–
   (क) पूँजीपति (ख) किसान
   (ग) नेता (घ) मजदूर
4. 'उत्थान' कवना विधा के रचना ह ?
   (क) कहानी (ख) नाटक
   (ग) निबंध (घ) कविता
5. कवि का अनुसार आज केकर सपना पूरा हो गइल ?
   (क) बापू के (ख) अंग्रेजन के
   (ग) दूनों के (घ) केहू के ना

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. हमनी के पुरुखन के कवन राह हवे ?
2. फेर एह देश के माथा ऊँचा कइसे भइल ?
3. भारत महान कइसे भइल ?

4. महेन्द्र शास्त्री के कविता के विशेषता बताईं ।
5. पठित कविता के भावार्थ लिखीं ।
6. 'उत्थान' गीत हवे कि कविता ? गीत आ कविता में का अन्तर होला ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी भाषा-साहित्य के विकास में महेन्द्र शास्त्री के योगदान के वर्णन करीं ।
2. महेन्द्र शास्त्री सामाजिक सरोकार के रचनाकार रहीं । एह कथन के समीक्षा करीं ।
3. नीचे दिहल मुहावरन के प्रयोग करत अइसन वाक्य बनाईं कि अर्थ साफ हो जाय-
   (क) मन छोट भइल
   (ख) माँथ ऊँच भइल
   (ग) छाती उतान भइल
4. 'उत्थान' कवना संदर्भ कावर इशारा करत बा ? बतलाईं ।

परियोजना कार्य

1. एगो किसान के दिनचर्या लिखीं ।

अध्याय दस

रामनाथ पाण्डेय

[रामनाथ पाण्डेय के जनम सारन जिला में भइल रहे । उहाँ के रेलवे के सेवा में कार्यरत रहनीं । भोजपुरी के पहिला छपित उपन्यास 'बिंदिया' के लेखक । अउर कई गो उपन्यास प्रकाशित जवना में 'जिनगी के राह' आधे-आध इमिरीतिया काकी आ 'महेन्दर मिसिर बहुते प्रसिद्ध । सैकड़न कहानियन के रचायिता । कथाप्रधान पत्रिका 'चाक' के कई अंक के संपादन ।]

अँचरा के छाँह

रामलाल के अपना नोकरी के अवधि में कहवाँ-कहवाँ भरमे के पड़ल रहे, अब उनका इआद नइखे । ना जाने ऊ कतना घटनन के गवाह बाड़न । ना जाने केतना जिनगी के बरत-बुतात ऊ देख चुकल बाड़न, केतना पराया के आपन आ आपन पराया

बनला के अनुभव उनका रहे; बाकिर अब गते-गते सभ भुलात जा रहल बाड़न । अब त उनका अपना चारो ओर घना कुहा छवले लउकेला, जवन खूब घामो भइला पर फाटे ना आउरो जमकत जाला । ज़िनगी के दउड़ में थाक के ऊ जइसे थउस गइल होखस । अब ऊ अपने आप में भुलाइल अपना दुअरा चुपचाप बइठल सड़क कावरी निहारत रहेलन ।

ऊ सभ त भुला गइलन, बाकिर एगो घटना जे उनका के बड़ा हलकान कइले रहे, बरजोरी उनका आँख के सोझा आ के हवा में पँवरे लागे । उनका के खरकोच-खरकोच के अपना उपस्थिति के भान करावत रहे । तब ऊ छटपटाये लागस । ओकरा से जनमत पीड़ा के ऊ बहुत दिन तक झेलत आइल रहलन । ऊ समुझे के लाख प्रयास करस, बाकिर उनका समुझ में कुछ ना आवे । ऊ ना त दोसरा के अपने हिरदया में कबहीं धँसे देलन, ना अपने कोई दोसरा में घँसे के प्रयास कइलन । तबो ओह दिन ओइसन काहे भ गइल । घर के बाहर गोली आ बम के धमाका होत रहे आ घर के भीतर ऊ जवानी से कसमसात गदराइल एगो सुन्नर मेहरारू के देह में सटल ओकर अँचरा ओढ़ले कइसे घंटन सुतल रह गइल रहलन ? करेजा से सटल उनकर करेजा धड़कत रहे, बाकिर उनका देह में वासना के एको कीड़ा तनिको ना

सुगबुगाइल रहे । काहे ? कइसे ऊ तिरिया उनका के आपन मरद कह के तिरिया-चरितर में सफल हो गइल रहे आ ऊ बँच गइलन ? एह सवालन के जवाब खोजत-खोजत ऊ अब एह सवालन के भुला गइल रहलन ।

झकझोराइल रामलाल के जिनगी एगो अजबे जिनगी रहे, जवना में उनकर आपन कवनो वजन ना रहे-हवा में उधियात पतई अइसन उनकर जिनगी । आखिर पतई ना रहे, त का रहे ? जब कबहीं ऊ कतहीं स्थिर होखे के चाहस, उनका के उठा के दोसरा जगे पटक दिआय । जब तनी संभरस, उठ के बइठे के चाहस, पास-परोस के चिन्हे लागस, उनका के उठा के दोसरा नया जगे पटक दिआय । दिन, महिना भा बरिस के कवनो गिनती ना रहे-आखिर काहे ? ऊ कई बेर अपने आप से पूछलन, बाकिर जवाब ना पा सकलन । एक बेर जब चारे महिना के भीतर उनका के बदल दिआइल, त ऊ तमतमा गइल रहलन आ अपना हाकिम के बंगला पर चढ़ गइल रहलन ।

हाकिम ताड़ गइल आ इनका के आधा घंटा बंगला में बइठवला के बाद कहलख-'रामलालजी, राउर देह त बड़ा दवंकल लागता । मिजाज ठीक बा नू ?....'

रामलाल चुप । उनकर ओठ जइसे केहू साट देले होखे ।

'अपने बोलत काहे नइखीं ? नोकरी बा, त बदली होइबे करी । ई बात साँच ह, जे अपने के बदली हरसठे होत रहेला । ई कवनो ग़लती आ अपने के दंड देवे खातिर ना होखे । ई अपने के ईमानदारी आ काम के महत्त्व के समझदारी रखला के ओजे से होता । आज अपना राष्ट्र पर खतरा के बदरी उमड़-उमड़ के घेर रहल बा । बाहरी आ भीतरी के तेज हवा झकझोर रहल बा । आतंकवाद के नाँव पर अपना राष्ट्र के नेंव हिलावल जा रहल बा । अपनहीं अइसन लोग नेंव बँचा रहल बा । अपने के एक जगे छोड़ल खतरनाक बा । अपने के जान जाये के भय बा । अपने के गंध देस के दुस्मन आ आतंकवादी तक ना पहुँचे, एह से अपने के बदली कइल हमनी के लाचारी बा ।' हाकिम कह के अपना कमरा में चल गइलन ।

तब रामलाल चुपचाप फाटक के बाहर निकल गइल रहलन । सरकार के इहे मजबूरी रामलाल के पतई अइसन उधि-आवत रहल आ ऊ सेवा-निवृत्त हो के अपना घरे आ गइलन । उनकर आपन मजबूरी रहे कि ऊ अपना परिवार के अपना संगे ना रख सकलन । घरे राते आवस, पराते भागस । एह से ऊ ठीक से ना अपना लइकन के सेयान होत देखलन, ना अपना जवान मेहरारू के बुढ़ात । ऊ त एतना मजबूर रहलन कि जब उनका

बेटा-बेटी के बम से मार दिहल गइल, तब ऊ अपना मेहरारू के आँख से ढरकत लोर तक ना पोंछ सकले रहलन आ तब अपना लाचारी पर घंटन आपन लोर अपने पोंछले रहलन ।

ऊहे रामलाल सेवा-निवृत्त भइला का बाद अपना दुअरा चुपचाप बइठल कबहीं अपना मेहरारू के चेहरा पर के पसरल उदासी के देखस, त कबहीं सड़क पर पसरल कुहासा के । कबहीं मन उबिआ जाय, त उठ के टहले लागस ।

ओह दिन ऊ ओसही सड़क कावरी निहारत रहस । उनका लागल कुहासा चीड़त एगो लइका आ के उनका सामने खड़ा भ गइल ।

'रामलाल के इहे घर ह ?' -लगे आ के ऊ लइका पूछलस ।

'हँ !' -रामलाल ओकरा के चिन्हे के प्रयास करत कहलन ।

'अपने ?' -ऊ पूछलस ।

'हम रामलाल हई ।' रामलाल जबाब देलन ।

'हम अपने लगे रहे आइल बानी ।' -ऊ लइका कहलस ।

'हमरा घरे रहे ?' -रामलाल अचरज करत पूछलन ।

'जी, हमार माई मरे के कुछ दिल पहिले कहले रहे कि

बेटा, जब हम मार दिहल जायेब, त तूँ बदला लेवे खातिर गाँव में मत रहिह । रामपुर के रामलाल जी लगे चल जइह । ऊ तोहरा के आपन बेटा अइसन पोसिहें ।'

–ऊ लइका कहलस ।

'हम जरूर पोसब, बबुआ; बाकिर–' कहत–कहत रामलाल चुपा गइलन ।

'बाकिर का ?' –लइका पूछलस ।

'तोहार नाँव का ह ? आपन गाँव आ अपना मतारी–बाप के नाँव बताव ।' रामलाल पूछलन ।

'हमरा के अपने ना चिन्हलीं । हमार माई पिरितिया एक दिन राउर जान बँचवले रहे । हमार घर उराँव में बा । बाप के नाँव तिरलोकी आ हमार नाँव परकास ह ।' ऊ लइका जबाब दिहलस ।

'उराँव–तिरलोकी–पिरितिया– जइसे गते –गते उनका कुछ इआद पड़े लागल ।

'जी, ऊहे पिरितिया, जवन अपने के एक दिन बँचवले रहे ।' ऊ लइका कहलस ।

'उराँव के पिरितिया ।' जइसे सनई में केहू तिल्ली बार देले होखे । भक् से अँजोर भ गइल । रामलाल के उराँव के दिन ओमें लउके लागल । तिरलोकी के हँसत चेहरा उनका लउके

लागल । पिरितिया के पिरित के छाँव में बइठल ऊ अपंना के अनुभव करे लगलन । बरिसन के सुतल इयाद अंगराई लेत उठ के बइठ गइल ।

उराँव । तब आतंकवादियन के प्रधान अड्डा बन गइल रहे । बारूदी गंध ओह गाँव से निकल-निकल चारो ओर फइलत रहे । बम आ गोली के धमाका के चलते सान्त बेयार आपन राह बदल देले रहे । आतंक के नाँव पर बेकसूर आदमी के खून से धरती के पटवन होत रहे, जवना के ओजे से लहलहात खेत परती पड़ गइल रहलन सन ।

खून के छींटा से जब सरकार के चेहरा बदरंग होखे लागल, त ओकरा निदान के खोज कइल सरकार के विंवसता बन गइल । आतंक के जड़ कहवाँ बा ? बंवरलत्ती अइसन ई कइसे चारो ओर छपले जाता । एकर पता लगावे खातिर रामलाल के उराँव भेजल गइल रहे । ऊ एगो मास्टर के रूप में गाँव में आ के जम गइलन । बड़ा स्नेह आ लगन से अग्यानता के क्षेत्र में ग्यान के जोत फइलावे लगलन । ओह गंधाइल जिनगी में एगो नया गंध के अनुभव सभकर धेंयान उनका ओरी खींच देलस । घर-घर में उनकर प्रवेश भ गइल । तिरलोकी आ पिरितिया त उनकर एकदम आपन बन गइल रहलन सन । अपना हिकमत से

ऊ जान गइल रहलन जे ई दूनो मरद-मेहर कट्टर आतंकवादी हवन सन; बाकिर ऊ ओकनी के बिस्वासी बनत गइलन । पिरितिया के चढ़ती जवानी रहे । ओकरा में रूप रहे, रंग रहे, लोगन के अपना ओर खींचे के अपार शक्ति रहे । तबे त ओह जमात में ओकर मान जादे रहे ।

'अपने के घर-परिवार बा कि ना ?' एक दिन ऊहे पिरितिया रामलाल से एकन्ता में पूछलख ।

रामलाल सकपका के ओकरा ओर देखे लगलन ।

'सकपकाईं मत । साफ-साफ बताईं । हमरा मन में तनिको खोट नइखे ।' ऊ कहले रहे !

'पिरितिया...' रामलाल बात टाले खातिर कुछ कहे के चहलन ।

'मास्टर साहेब, हमरा के भरमाईं मत । अपने भरम में मत रहीं । अपने गाँव के भेद लेवे आइल रहीं, बाकिर गाँव अपने के भेद जान गइल । ग्यान के परकास फइलावेवाला आतंकवाद के दुस्मन होला । अपने के नेह के डोरी में हमनी दूनो बेकत बन्हा गइल बानी सन, एह से कह रहल बानी । अपने के भेद खुल गइल बा । राते पार्टी के बइठक में हमनी अपने के अपना घेरा में घेर लेली सन ।' -पिरितिया बिना कवनो लाग-लपेट के कहलख ।

'हमरा के अपना घेरा में ?' रामलाल पूछले रहलन ।

'हँ, हमार अपने से निहोरा बा, कवनो लाथे अपने गाँव छोड़ के चल जाईं ।' पिरितिया कहले रहे ।

'ई संभव नइखे । हम मजबूर बानी ।' रामलाल कहले रहलन ।

'काहे?' पिरितिया पूछले रहे ।

'छोड़ एह बात के । एगो बात बताव । एह काम से आखिर तोहरा लो के कवन लाभ होता ? तूँ लोग जमीन दखल करताड़ । सरकार बेदखल करावतिया । अनेरे बेकसूर मारल जाता ।' –रामलाल सवाल कइलन ।

'लाभ होता । हजारन साल से दबल लोग तन के खड़ा हो रहल बा । दबावेवाला के ललकार रहल बा ।' –पिरितिया बिसवास भरल जवाब दिहले रहे ।

'ना पिरितिया ! ई तोहनी के भरम बा । तोहनी के आंदोलन अब भटक गइल बा । जवना बनूक के मुँह पहिले सामंत आ सरकार ओरी रहे, अब घूम के अपने लोग का ओरी भ गइल बा । अब त गरीबे के खून से एह जंग के तर्पण कइल जा रहल बा ।' –रामलाल समुझावत कहले रहें ।

'अपने ठीक कहतानी । आपसी गुटबंदी आंदोलन के मुँह

मोड़ देलख ।' -पिरितिया साँच स्वीकार करत कहले रहे ।

'एह पर विचार काहे नइखे होत ?' -रामलाल पूछले रहले ।

'होखी, बाकिर अबहीं बाढ़ के पानी चढ़ाव पर बा ।' -पिरितिया कहले रहे ।

एह बातचीत के ठीक पँचवाँ दिन पिरितिया तनी रात बितला आइल आ रामलाल के उठा के अपना घरे ले गइल आ अपना बिछावना पर सुते के कहलख-'चुपचाप सुतल रहीं । बोलीं ना ।'

रामलाल बिछवना पर लेट गइलन । घंटे भर बाद बाहर धायँ, धायँ, धमाका होखे लागल । पिरितिया के केवाड़ी पिटाये लागल । तब पिरितिया आइल आ रामलाल के बगल में सट के सुतत गते से कहलख-'अपने घबराईं मत । हम देख लेब ।'

भड़भड़ा के केवाड़ी टूट के गिर पड़ल । पिरितिया अपना अँचरा से रामलाल के मुँह तोप देलख । तले कुछ लोग भीतर ढुक आइल । टर्च के रोसनी चारो ओर फइल गइल ।

'हल्ला मत कर लोग । राते से हमरा मरद के तबियत बहुत खराब बा । चुपचाप चल जा लोग ।' -पिरितिया रामलाल के अपना अँकवारी में जतले कहलख ।

'मास्टर कहवाँ बा ?' -एगो पिरितिया के मुँह पर टर्च के रोसनी फेंकत कहलख।

'ना मनब लोग, बताईं कहवाँ बा ?' -कहके पिरितिया अपना बिछवना के नीचे से राइफल खींच के बइठले बइठल तान के कहलख आ ठाँय से गोली दाग देले रहे ।

भगदड़ मच गइल आ देखते-देखते सभे भाग गइल । कवनो तरे अधरतिये के पिरितिया रामलाल के पुलिस चौकी तक पहुँचवा देले रहे ।

एह घटना के बाद ऊ आपन रिर्पोट अपना हाकिम के दे देलन । हाकिम बड़ा खुस भइल रहलन आ कहले रहलन -'अपने आतंकवाद के जड़ तक पहुँच के बड़ा सराहनीय काम कइलीं हँ । देस अपने के सदा आभारी रही; बाकिर,...।' -कहत-कहत ऊ चुप भ गइलन । उनकर चेहरा गंभीर भ गइल ।

'अपने एतना गंभीर काहे भ गइलीं ?' - रामलाल पूछलन ।

'रामलालजी, दुख बा अपने जान पर खेल के जवना रहस्य के उद्घाटन कइले बानी, तवना पर सरकार कुछ ना करी । ओकर आपन लाचारी बा ।' -हाकिम कहले रहलन ।

रामलाल के सामने पूरा इतिहास के पन्ना फड़फड़ाये

ागल रहे ।

'आ तोहार बाप ?'-ऊ लइका से पूछलन ।

'माई के मरे के पहिले एगो दल उनका के मार देले रहे ।' ऊ लइका कहलख ।

रामलाल लपक के ओह लइका के अपना अँकवारी में ध के अपना मेहरारू से कहलन-'देखत का बाड़ू । एकरा के अपना करेजा में साट के अपना अँचरा से तोप ल, ना त कवन ठेकान कवनो एकरो के बम से मार दी । एकरे माई हमरा के आपन अँचरा ओढ़ा के बँचवले रहे । तोहरा से एक दिन कहले रहीं न ।'

रामलाल के मेहरारू ओह लइका के अपना करेजा में सटा के अपना अँचरा से तोप लेली । उनका लागल उनका चारो ओरी बम फाटत होखे ।

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नीचे दिहल वाक्य में खाली जगे के पाठ का आधार पर उचित शब्द से भरीं-

   (क) उनका अपना चारो ओर घना.... छवले लउकेला, जवन खूब भइला पर फाटे ना आउरो..... जाला ।

   (ख) जिनगी के .....में थाक के ऊ जइसे..... होखस ।

   (ग) रामलाल अपना दुअरा पर चुपचाप बइठल कबहीं अपना मेहरारू के चेहरा पर..... के देखस, त कबहीं सड़क पर पसरल..... के ।

2. 'अँचरा के छाँह' कहानी के नायक रामलाल कवना गाँव के रहले ?

   (क) उराँव, (ख) रामपुर,

   (ग) तिरलोकीपुर, (घ) एह में से कहीं के ना

3. परकास केकर बेटा रहे ?

   (क) रामलाल के, (ख) पिरितिया के,

   (ग) उराँव के, (घ) एमें से केहू के ना ।

4. 'आपन' के विपरीत अर्थ वाला शब्द का होई ?

   (क) पराया, (ख) दोसर,

   (ग) दोसराइत, (घ) दुश्मन ।

5. 'अँचरा के छाँह' कवना विधा के रचना ह ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. रामलाल दुअरा पर चुपचाप बइठल का करत रहले ?
2. रामलाल के जान के बचवले रहै ?
3. जिनगी के कवन घटना रामलाल के हलकान करत रहे ?
4. रामलाल कइसन आदमी रहले ?
5. रामलाल के बदली जल्दी-जल्दी काहे होत रहे ?
6. रामलाल के जिनगी कइसन रहे ?
7. अपना परिवार के सँगे ना राखे के रामलाल के कवन मजबूरी रहे ?
8. परकास के माई का काहे भरोसा रहे कि रामलाल उनका के अपना बेटा अइसन पोसिहें ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रामलाल के बेर-बेर बदली के कारण हाकिम का बतवले ।
2. कहानी का आधार पर रामलाल का चरित्र पर प्रकाश डालीं ।
3. पिरितिया रामलाल के जान काहे आ कइसे बचवलसि ?
4. 'आतंकवाद' देश के आन्तरिक सुरक्षा खातिर एगो खतरा बन गइल ह । एपर संक्षेप में आपन विचार लिखीं ।
5. एह कहानी के कथानक का आधार पर एकरा शीर्षक 'अँचरा के छाँह' नाँव पर विचार लिखीं ।

कार्य-परियोजना

1. अपना राज्य में कवन-कवन जिला नक्सलवाद से पीड़ित बा-एह के पता करके एगो सूची बनाई ।

अध्याय ग्यारह

मनोरंजन प्रसाद सिन्हा

[पूरा नाम मनोरंजन प्रसाद सिन्हा । इहाँ के छपरा के प्रसिद्ध राजेन्द्र कॉलेज के यशस्वी प्रिंसिपल रहीं । बच्चन के मधुशाला के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का छात्रावास में पहिलका पाठ के स्वनामधन्य अध्यक्ष । अंग्रेजी, हिन्दी, भोजपुरी में अनगिनत रचना । इहाँ के गीत 'फिरंगिया' आजादी के लड़ाई में हथियार अइसन इस्तेमाल भइल ।]

फिरंगिया

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज इहे भइलऽ मसान रे फिरंगिया ।
अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल,
कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया ।
जहवाँ थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे,
लाखो मन गल्ला और धान रे फिरंगिया ।
उहें आज हाय राम ! मथवा पर हाथ धरि,
बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया ।
हाय दैव ! हाय ! हाय ! कौना पापे भइल बाटे,

हमनी के आज अइसन हाल रे फिरंगिया ।
सात सौ लाख लोग दू-दू साँझ भूखे रहे,
हरदम पड़ेला अकाल रे फिरंगिया ।
जेहु कुछ बाँचेला त ओकरो के लादि-लादि,
ले जाला समुन्दर के पार रे फिरंगिया ।
घरे लोग भूखे मरे, गेहुँआ विदेश जाय,
कइसन बाटे जग के व्यवहार रे फिरंगिया ।
जहवाँ के लोग सब खात ना अघात रहे,
रुपया से रहे मालामाल रे फिरंगिया ।
उहें आज जेने-जेने अँखिया घुमा के देखु,
तेने-तेने देखबे कंगाल रे फिरंगिया ।
बनिज-बेपार सब एकउ रहल नाहीं,
सबकर होई गइल नास रे फिरंगिया ।
तनि-तनि बात लागि हमनी का हाय रामा,
जो इले बिदेसिया के आस रे फिरंगिया ।
कपड़ो जो आवेला बिदेस से तो हमनी का,
पेन्ह के खिला निज लाल रे फिरंगिया ।
आज जो बिदेसवा से आवे ना कपड़वा तऽ,
लंगटे करब जा निवास रे फिरंगिया ।
हमनी के ससता में रूई लेके ओकरे से,
कपड़ा बना-बना के बेचे रे फिरंगिया ।

अइसहीं-अइसहीं दीन भारत के धनवाँ के,
लूटि-लूटि ले जाला बिदेस रे फिरंगिया ।
रुपया चालिस कोट भारत के साले-साल,
चल जाला दूसरा के पास रे फिरंगिया ।
अइसन जो हाल आउर कुछ दिन रही रामा,
होइ जाइ भारत के नास रे फिरंगिया ।
स्वाभिमान लोगन में नामों के रहल नाहीं,
ठकुरसुहाती बोले बात रे फिरंगिया ।
दिन रात करेले खुसामद सहेबवा के,
चाटेले बिदेसिया के लात रे फिरंगिया ।
जहवाँ भइल रहे राजा परताप सिंह,
और सुरतान अइसन वीर रे फिरंगिया ।
जिनकर टेक रहे जान चाहे चलि जाय,
तबहूँ नवाइब ना सिर रे फिरंगिया ।
उहँवे के लोग अइसन अधम भइले,
चाटेले बिदेसिया के लात रे फिरंगिया ।
सहेबा के खुशी लागी करेलन सबहीन,
अपनो भइअवा के घात रे फिरंगिया ।
जहवाँ भइल रहे अरजुन-भीम, द्रोण,
भीषम, करन सभ सूर रे फिरंगिया ।
उहें आज झुंड-झुंड कायर के वास बाटे,
साहस वीरत्व भइल दूर रे फिरंगिया ।

केकरा करनिया कारन हाय भइल बाटे,
हमनी के अइसन हवाल रे फिरंगिया ।
धन गइल, बल गइल, बुद्धि गइल, विद्या गइल,
हो गइलीं जा निपटे कंगाल रे फिरंगिया ।
सब विधि भइल कंगाल देस तेहू पर,
टीकस के भार ते बढ़ौले रे फिरंगिया ।
नून पर टिकसवा, कूली पर टिकसवा,
सब पर टिकसवा लगौले रे फिरंगिया ।
स्वाधीनता हमनी के नामों के रहल नाहीं,
अइसन कानून के बरे जाल रे फिरंगिया ।
प्रेस ऐक्ट, आर्म्स ऐक्ट, इंडिया डिफेंस ऐक्ट,
सब मिलि कइलस ई हाल रे फिरंगिया ।
प्रेस ऐक्ट लिखे के स्वाधीनता के छीनलस,
आर्म्स लेलस हथिआर रे फिरंगिया ।
इंडिया डिफेंस ऐक्ट रच्छक के नाम लेके,
भछक के भइल अवतार रे फिरंगिया ।
हाय ! हाय ! केतना जुवक भइले भारत के,
ए जाल में फँसि नजरबंद रे फिरंगिया ।
केतना सपूत पूत एकरे करनावा से,
पड़ले पुलिसवा के फंद रे फिरंगिया ।

अजो पंजबवा के करिके सुरतिया से,
फाटेला करेजवा हमार रे फिरंगिया ।
भारते के छाती पर भारते के बचवन के,
बहल रकतवा के धार रे फिरंगिया ।
छोटे-छोटे लाल सब बालक मदन सब,
तड़पि-तड़पि देले जान रे फिरंगिया ।
बुढ़िया महतारी के लकुटिया छिनाइ गइल,
जे रहे बुढ़ापा के सहारा रे फिरंगिया ।
जुवती महतारी के लकुटिया छिनाइ गइल,
जे रहे जीवन के आधार रे फिरंगिया ।
साधुओ के देहवा पर चूनवा के पोति-पोति,
रंडि आगे लंगटे करौले रे फिरंगिया ।
हमनी के पसु से भी हालत खराब कइले,
पेटवा के बल रेंगअवले रे फिरंगिया ।
हाय ! हाय ! खाय सबे रोवत विकल होके,
पीटि-पीटि आपन कपार रे फिरंगिया ।
जिनकर हाल देखि फाटेला करेजवा से,
अँसुआ बहेला चहुँधार रे फिरंगिया ।
भारत बेहाल भइल लोग के ई हाल भइल,
चारो ओर मचल हाय-हाय रे फिरंगिया ।

तेहू पर अपना कसाई अफसरवा के,
देले नाहीं कवनो सजाय रे फिरंगिया ।
चेति जाउ चेति जाउ भैया रे फिरंगिया से,
छोड़ि दे अधरम के पंथ रे फिरंगिया ।
छोड़ि दे कुनीतिया सुनीतिया के बाँह गहु,
भला तोर करी भगवन्त रे फिरंगिया ।
दुखिया के आह तोर देहिया भसम करी,
जरि-भूनि होई जइबे छार रे फिरंगिया ।
एही से त कहतानी भैया रे फिरंगी तोहे,
धरम से करु तें बिचार रे फिरंगिया ।
जुलुमी कानून ओ टिकसवा के रद क दे,
भारत के दे दे ते स्वराज रे फिरंगिया ।
नाहीं तऽ ई साँचे-साँचे तोरा से कहत बानी,
चौपट हो जाई तोर राज रे फिरंगिया ।
तैंतिस करोड़ लोग अँसुआ बहाई ओमें,
बहि जाई तोर समराज रे फिरंगिया ।
अन्न-धन-जन-बल सकल बिलाय जाई,
डूब जाई राष्ट्र के जहाज रे फिरंगिया ।

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'फिरंगिया' के रचनाकार के नाम बताईं ?
2. मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के जन्म कवना जिला में भइल रहे ?
3. 'फिरंगिया' कविता कवना चीज से सम्बन्धित बा ?
   (क) प्रकृति (ख) देशभक्ति
   (ग) धर्म (घ) समाज
4. राजा प्रताप सिंह कहाँ भइल रहले ?
   (क) भारत (ख) इंगलैण्ड
   (ग) श्रीलंका (घ) अमेरिका
5. भारत के धन अंग्रेज कहाँ ले गइले सन ?
   (क) चीन (ख) अमेरिका
   (ग) श्रीलंका (घ) इंगलैण्ड

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. आजादी का पहिले भारत में किसान लोग काहे दुखी रहे ?
2. लोग में स्वाभिमान के नाँवों निशान ना बाँचल रहे, काहे ?
3. राजा प्रताप सिंह के का टेक रहे ?
4. 'हो गइलीं जा निपटे कंगाल दें फिरंगिया' के कारण का रहे ?

5. अंग्रेजन के लगावल कुछ खास टैक्स के नाँव बतलाईं ।
6. पंजाब के कवना घटना के इयाद कके कवि के हृदय फाट रहल बा?
7. कविता में आइल कुछ मुहावरा चुनीं आ ओकर अर्थ लिखीं । जइसे-

(क) पेट के बल रेंगल (ख) करेजा फाटल
(ग) कपार पीटल (घ) बाँह गहल
(ङ) जहाज डूबल (च) लात चाटल
(छ) सिर नवावल ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फिरंगिया के आधार पर अंग्रेजन का राज्य में भारत के दुर्दशा के वर्णन करीं ।
2. राणा प्रताप का बारे में एगो छोट लेख लिखीं ।
3. नीचे दिहल केहू एक आदमी का बारे में लिखीं-

(क) अर्जुन (ख) भीम
(ग) भीष्म (घ) द्रोण

4. आजादी का पहिले अंग्रेज कवन-कवन टैक्स लगवले रहले स ?
5. कवि अंग्रेजन के का सलाह देता ? सलाह ना मनला पर का होई?

परियोजना

1. आजादी के लड़ाई से संबंधित पाँच गो लोकगीतन के संग्रह करीं ।

अध्याय बारह

रवीन्द्रनाथ ठाकुर टैगोर

[बंगला के सुप्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वविख्यात बानी । इहाँ के लिखल गीत 'जन-गण-मण-अधिनायक....' हमनी क राष्ट्रगान हवे । 1913 में इहाँ के किताब 'गीतांजलि' पर नोबल पुरस्का मिलल । 'गीतांजलि' के एगो गीत के भोजपुरी अनुवाद दिहल जाता ई अनुवाद भोजपुरी कवि रामबिहारी ओझा रमेश सीधे बंगला से कइल बानी । ई गीत भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के (जनवरी 2005 अंक) म छपल ।]

पुनि रे तिरिथिया में जागु चित्त, धीरे
पुनि रे तिरिथिया में जागु चित्त, धीरे-
महामनु भारत के सागर का तीरे ।

रुकि इहाँ आपन बढ़ाइ दूनो बँहिया
नर देवता के छू ले चरन के छँहिया
महामोद मने भरि मुकुति का सुरे निज-

हिया खोलि बार-बार कइले बिनितिया ।
ध्यान में मगन योगिराज हिमवनवा
नदियन के माला जपे तपे खेत-बनवा
सुख से निहारू ई पावन धरती रे । महामनु..

के बताई, केकरा ले अइले ई धरवा
कहाँ से चलल आवे भरे के सगरवा
आरज अनारज द्राविड़ इहाँ चीन बा
हूण शक मुगल पठान एमें लीन बा
पछिया दिशा में जे खुलल दरवाजा
पीठी ले-ले पाहुर रहल सभे आ-जा
देइ-लेइ-मिलि के रहे के एही भीरे । महामनु...

धार ध के जुधि के करत जयकरवा
पागलन्नि लेखा मचावत हाहाकरवा
लाँघि मरुभूँइ- परबत- बन- झरिया
लाके बरबादी जे कइल पइसरिया
सभ केहू अब हमरा में महफूज बा
दिल में जे धड़के ओही के सुर-गूँज बा
बाजु-बाजु-बाजु आजु रुदरऽ के बीना
दूर जे बा खाढ़ अबो धइ मने घिरिना
आई ऊहो पास मोरा बान्ह तूरि, हीरे । महामनु...

इहाँ कबो नित पल-पल छिन-छिन में
महा ओंकार के महान सुर-धुनि में
भावुक हिरदिया के सुमधुर तान पर
गूँजत रहल एके मंत्र कल्याणकर
तपवा का बले ओही एकता-अगिन में
आहुति आपन जे दिहल अनगिन में
भेद के दीवार ढाहि जागल रहल जे
सीमाहीन एगुड़े हिरिदया रहल से ।
ऊहे तप-साधना-आराधना उमेदी
खोलले बा निज जगिशालवा के बेदी
मिले के बा इहवाँ सभे का नतसीरे । महामनु...

ओही रे अगिनिया का जरि से झरत बा
दुखवा के लाल-लाल लुतुकी बरत बा
सहहीं के होई, एमें दहहीं के होई
भगिया के रेख ना मिटाइ सकी कोई
मनवा रे, ढोउ ओही दुख के गँठरिया
सुनु का कहत सके सुर से हँकरिया
सभे लाल-भइ के घंघरिया उतारि दे
चिर अपमान के बिलरिया के मारि दे

दुखवा के दरद दुसह दूर भागी
फेनु त महान प्रान तने तोरा जागी
काटे राति जागि-जागि माई भारती रे । महामनु...

आरज-अनारज गला में बाँहि डारे
हिंदू-मुसलमान सिख पारसी पधारे
बौद्ध-जैन जहूदी धरम ध्वज धारे
आवे अंग्रेज ईसाइयो एहि द्वारे
बाबाजी, आपन तनी साफ कके मनवा
हाथ धके सभका के ले चलीं अंगनवा
होखे जे पतित चंडाल जोश भरि के
आवे सभ लोग अपमान से उबरि के
माई के पूजन खाति बेगे चलि आवे
शुभ रे कलसवा में हथवा लगावे
जलवा तिरिथिया के भरि, संगहीं रे । महामनु...

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रवीन्द्रनाथ ठाकुर कवना भाषा के कवि रहीं ?
2. पठित कविता के अनुवाद के कइले बा ?
3. ई कविता कवना किताब से लिहल बा ?
4. रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नोबल पुरस्कार कब मिलल ?

   (क) 1915 (ख) 1913

   (ग) 1910 (घ) 1916
5. ई गीत भोजपुरी के कवना पत्रिका में छपल ?

   (क) भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (ख) उरेह

   (ग) भोजपुरी कथा-कहानी (घ) बिगुल

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. एह गीत में कवना-कवना नस्ल के नाँव आइल बा?
2. पठित गीत का आधार पर बताई कि दुनिया में कवन-कवन प्रमुख धर्म बा ।
3. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परिचय दीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पठित गीत के भावार्थ लिखीं ।
2. 'ई गीत सबका के मिल-जुल के रहे के सीखावता ।' एह कथन के पुष्टि करीं ।

परियोजना कार्य

1. कवनो भोजपुरी गीत आ कहानी के हिंदी भा अंग्रेजी में अनुवाद करीं ।

अध्याय तेरह

डॉ. विद्यानिवास मिश्र

[विद्यानिवास मिश्र के जनम 14 जनवरी 1926 के गोरखपुर जिला (उत्तरप्रदेश) के पकड़डीहा गाँव में भइल रहे । उहाँ के प्रारंभिक शिक्षा गाँवे में, माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर आ उच्च शिक्षा बनारस में भइल । उहाँ के संस्कृत के पारम्परिक शिक्षा घरे आ बनारस में कइनी। भारतीय लोक संस्कृति, जीवन-मूल्य आ माटी के गंध उहाँ के लेखन में रचल-बसल बा । उहाँ के सौ से अधिक पुस्तक प्रकाशित बा जवना में प्रमुख बा- छितवन की छाँह, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, तमाल के भरोखे से, रामायण का काव्य मर्म । उहाँ के भोजपुरी रचनन के संग्रह 'मानिक मोर हेरइलें' नाँव से छपल बा । एकरा अलावे उहाँ के 'वाचिक कविता भोजपुरी' नाँव से भोजपुरी लोकगीतन के संकलन कइले बानी । उहाँ के उल्लेखनीय साहित्य सेवा के मानत सरकार इहाँ के राज्यसभा में मनोनीत कइलस । उहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ग्यारहवाँ अधिवेशन (26-27 मई 1990, रेणुकूट, उत्तरप्रदेश) के अध्यक्षता कइले रही ।

'मानिक मोर हेरइलें' इहाँ के प्रसिद्ध ललित निबंध ह ।]

मानिक मोर हेरइलें

भोजपुरी में लिखे के मन बहुते बनवलीं त एकाध कविता लिखलीं, एसे अधिक ना लिखि पवलीं । कारन सोचीले त लागेला जे का लिखीं, लिखले में कुछ रखलो बाऽ ! आ फेरो कइसे लिखीं ? मन से न लिखल जाला ! आ मन-मानिक होखो चाहे ना होखो- हेरइले रहेला, बेमन से लिखले में कवनो रस नइखे । घरउवाँ चइता के बोल हऽ: 'जमुना के मटिया; मानिक मोर हेरइलें हो रामा'....! हमार घुँघुची अइसन मन बेमन से पहिरावल फूलन के माला में हेरात रहेला । जवन ना चाहीलें तवन करे के परेला लोगन के मन राखे खातिर । जवन कइल चाहीलें तवना खातिर एक्कों पल केहू छोड़े देबे के तइयार नाही । लोक के चिंता जीव मारते रहेला । मनई जेतने लोक के होखल चाहेला, लोक ओतने ओके लिलले जाला । चलऽ, चारा पवलीं

नाहीं, बड़ा नरम चारा बा । एह लोक के कोसे चलीलें त एक मन बड़ा ताना मारेला-'ए बाबू ! तुहीं त एके सहकवलऽ, अब काहें झंखत हव !' बतिया ओहू सही बा, सहकावल त हमरे ह, लोक लोक हमहीं अनसाइल कइलीं । देखीलें लोक केहु के होला नाहीं, जेतना लेला ओकर टुकड़ों नाहीं देला । निरालाजी के गीत बा 'वह देती थी सबके दाँव बन्धु', हमरो जिनगी सबके दाँवे दिहले में सेरा अस गइलि, हमार दाँव केहू देई, ई एह जनम में त होखे वाला नाहीं बा ।

एतना घुमलीं, एतना देखलीं, एतना पढ़लीं, एतना गुनलीं सज्जी में अपने भाग लगावत गइलीं । भाग लगावत लगावत भजनफल ले गइलें नेउरा मामा, बाकी बाँचल सुन्न, अब एमें का भाग लगाईं ? अब किछू हासिल नाहीं लागी, हमरे भागि में बस सुन्नवे आई । आजो हमके चैन से बइठे त दे । उहो नाहीं होई । मन उमड़त-घुमड़त रही, कवने-कवने कोना अँतरी से महीन आवाज आवत रही, 'बाबू, लिख न हमरो बतिया ! कब्बो अमवाँ के बारी कही, 'एही बरिया में जेठ के दुपहरिया के घाम नेवरले बाड़ बाबू, अधपाकल आमे खातिर रार कइले बाड़, एह अमरइया के सुधि कब्बो लेबऽ ? दीदी आ दीदी के समवरिया मनमतिया, रोरा, परोरा, सुनरदेइया ई सब दुलरा के बोलावेली, बाबू, हमन के

आँखिन के पुतरी, झुलुवा ना झुलबऽ; एगारह बरिस के भइलीं, इस्कूल जाये लगलीं, हुड्ड अस नोकरन के साथे । इमली के डारि में झूला पड़ल, ऊ हमहूँ के बइठा लिहलें, पेंग मारे लगलें नोकर, हम झूला के बीच में बइठलीं, एक ओरि पिछवारे के जोलहा के बेटी, एक ओर हम । इमली के अड़ार डारि । ओसे हुड्डन क पेंग सहि ना गइल । टूटलि अउर अररा के गिरलि, पीढ़वो गिरल, नीचे लरिकिया गिरलि ओकरे ऊपर हम । सबके कहीं न कहीं चोट लागल, बेसी चोट लइकिया के लागल, ओसे बेसी नोकरन के । चोट से जादा चिन्ता ओह लोगन के ई मचल कि बाबू कहीं कहि दीहें त हमन के कुसल नाहीं लरिकिया रोवे के रोवबे न करे- 'बाबू, केहू से कहिह मति, बप्पा सुनिहें त हमार कवन गति होई, हम नाहीं जानतानी । डर त अपनो भीतर रहे । एसे हम त चुप रहब, चोटिया कइसे चुप रही । सबे चोटि उभरल आ सभे कहल कि राही में ठोकर खाके गिरलीं । एक्के साथ एतना जनी के ठोकर समुझि में काहें ना आवो, धीरे-धीरे बाति खुलल, हँसी-दिल्लगी भइल, बाति ओराइ गइल । लेकिन ऊ इमली के डरिया अब्बो कबे-कबे टोकेले-ए बाबू, हमहूँ तोहरे सथवे गिरलीं, हमरो चोटिया मन परबऽ !

नइये उमिर में बियाह भइल, रेखियो अबहिन ठीक से

भीनल नाहीं रहे तब्बो हमके बड़वार बिटिहिनि के हँसी-मजाक झेलेके रहे, खिझियों बरे, भितरे-भितरे गुदगुदियो लागे । पंचवे दिन बरात बिदा भइल त गीति उठल,'चल न सखि, चलन चहत रघुराई !' आँखि भरि आइल । एतना मोह-छोह कहाँ से उपराला ओह उमिर में, कइसे मनई बाति-बाति मे आपन हो जाला, ओकरे सुधि में पँवरे लागेला । ऊ उमिरिया अब लवटी त नाहीं बाकिर ओह उमिरिया के कांहाइल, मान-मनउवल, नेह-छोह, बाति-बाति में अनखाइल, अकुलाइल, हेराइल आ मिलले पर बाति ना ओराइल.....ई सब मन से नाहीं छूटेला ? ऊ कुवाँरि अधकुँआर उमिरि, कब्बे-कब्बे हिसाब माँगले, 'बाबू का पवलऽ ? का गँववलऽ ?' जबाब दिहलो चाहीं त जबाब बा कहाँ ? हिसाब बट्टे खाते के बा, का जबाब देईं । सूरदास के पद हवे, 'लरिकाई की प्रीति कहो सखि, कैसे छूटत ।'

आजु खतियावे बइठीं त जानीं केतना हिसाब कपारे चढ़ल बा, कवनो जिनिगी उतरे के नाहीं; बस 'मूँदहुँ आँखि कतहुँ कछु नाहीं' के नियर ऊ सब बाति अन्हे क के जिनगी बितवले में कुसलि बा । पिछवारें के सुधि कवनो नीमन काम नाहीं, आगा देखे के चाहीं, आगा देखे वाला के जमाना होला । बाकिर करीं का ? पिछुवरवें त नेबुआ, अनार, कचनार के डारि में फूल

आवेला, बँसवरिया में जाने कवन-कवन चिरई बोलेलीं स । पिछुवरवें त आँखि मुनउवल खेललीं, ऊ पिछुवरवाँ के कइसे बढ़नी बहार दीं । आगा जाए के त लचारी बटले बा, नाहीं जाइब त धकेलि के लोग आगे फेंकि देईं । लोग के बाहर जा नाहीं पाइब । तब्बो मनवाँ रहि-रहि के भितरे-भीतर बिहरेला । आँवाँ नियर एही खींचातानी में कवनो ओर क ना भइलीं, घाटे जाईलें, धोबिनिया दुतकारेले, कहवाँ ई मुँहलेसना आइल, घरे जाईलें त धोबिया डंडा उठावेला एके भेजलीं धोबिनियाँ के ऊपर नजर राखें के, आ ई घरघुसना घरे लवटि आइल । ओही धोबी के कुतवा नियर हमरो लिखंत बा, धोबिनियाँ कि लीला नियर नवका जमाना के परपंचो समझे के मौका नाहीं मिलेला । धोबिनिया हमरे ऊपर तनिको पतियइबो नाहीं करेले, ई ओही दहिजरवा के पाछे-पाछे रहेला । धोबिया के नियर आपन मन धोवे वाला जिनगी क मालिक हमार मजबूरी समझेला नाहीं । दूनों से गइलीं -घरवों से, घटवो से । हजारी प्रसाद जी कहले बाटीं 'जुगुप्सित जन्तु सा उभयतो विभ्रष्ट ।' ऊहे हालि बा ।

एही में भोजपुरी के नवका पत्रिका के नेवता, भोजपुरी में लिखीं, कुछऊ लिखीं, लिखीं । कइसे ए बउराह लोगन के परतियाईं कि भोजपुरी में लिखे चलब त बिसरल-बिसरल बाति

उपराई । हम केके रोकब । आ जब सब दउरल आ जाई त कलमियाँ केके-केके सम्हारी ? चुप्पे रहल ठीक बा । अपने घर के भाखा में बाति त ऊ करे जेकर कवनो घर हो, जेके घरे जाए के फुरसति हो, जेके घरे गइले पर लोग चीन्हें । चीन्हें वाला लोग चलि गइल, केहू के आँखि नाहीं लउकेला, केहू चलि ना पावेला, केहू के होसे-ख्याल नाहीं रहेऽला । जे बा से हमरे सामने जनमल, ऊ का चीन्ही ? असइन लागत बा कि चिन्हारी करावे वाली मुनरी कहीं हेरा गइल । मनई के चिन्हारी जब हेरा जाले, तब घर रहलो पर नाहीं रहेला । आखिर जिनगी चिन्हववले कै नाँव ह । अपने के केहू चिन्हवा नाहीं पाई त जीके का होई ? एसे आपन चिन्हारी जरूरी होला । ई जमाना चिन्हारी के संकट के जमाना ह । अदमी के एक चिन्हारी से काम ना चले, एहसे कइगो चिन्हारी अदमी राखेला । कवनो-कवनो चिन्हारी त जोर-जबर्दस्ती से लोग पहिरा देला । एसे आपन असली चिन्हरिया बिसरि जाले; कवनो पुरनकी डेहरी में धरा जालें, हेरले मिलबे न करेले । फेरू ओढ़ावल चिन्हारी जिउ के बवाल हो जाले, न उतरले बनेला न पहिरते ।

जे खाँटी आपन होई, ओकर आगे नकली चिन्हारी लेके कइसे जाई, एही संकट में किछु लिखत नाहीं बनेला । मानिक से

बेसी घुंघुची हेरइले के दुख एह मनई-बेसाहे वाला जमाना में के समझी ? हाँ, हम ई जरूर पूछब, मनई त किनले मिलि जइहें ढेबुआ में तीन लेकिन घुँघुची कहाँ मिली ? अब सोनरो के दोकानी पर मिलीग्राम के बाट बा; रत्ती नाहीं चलेला । रत्तिया घुँघुचिये के न होले । जंगल सब काटि लिहल, बचल-खुचल में जवन गाछि होबो करी त के चीन्ही ? अब सब पेड़ नाहीं चीन्हत बा, पेड़न के जीव चीन्हता, ओकर जीवकोस जूड़घर में रक्खता । भला एह गुंजा के के पूछी । हमरे लेखा गुंजा थाती हो लरिकाई के, रेखिभिनाई के, बन-बन बिहरे वाला किसोर-कन्हइया के, दूसर केहू एकर मोल का जानी ? दूसर मान लेई मिलू जाय, ओके कहाँ मिली लरिकाई, कहाँ मिली पहिला फगुनहट के सिहरन, कहाँ मिली 'मनेर मानुस' मन के मीत के हियरा से हियरा जुड़ाइब । अपने पंचनि गुंजा के चीन्हा पूछबि से जवने के हाथ में लेते सज्जी नकली चिन्हारी उतरि जाय, ऊहे हमार गुंजा होई । अपने पंचनि ई चमक-दमक वाली चिन्हारी उतरवावे के जोखिम लेबे ना करब । ऐसे काहें देई ? आप लोगन के दू ठो मीठी-मीठी बात एही बहाने सुने के मिलल, एतनो मिलत जाय, नकलिए सही, फूल-पाती जूनी-जूनी लोग चढ़ावेला, भितरे-भीतर हँसी छुटेले । सोचीलें, लोग पाथर ढेला नाहीं फेंकता, ईहे कम बा ।

टटका फूले के तरसला के जरूरत नाहीं बा । टटका किछु रहि नाहीं पावता ।

आप सब कहब- आगे बढ़े बदे ई बलिदान करे के परेला, रथ के नीचे जाने केतना लहलहात फसिल कचरा जाले, केतना गीति, केतना पुरइन के चउक, केतना नान्ह-नान्ह जीव कचरा जाले, रथवा वेग से चलावे में के देखी कि का कचराता, आगे बढ़ला के काम बा, रूकला के नाहीं । आपके बाति एक सौ एक नया पइसा सही, बाकिर हमके सोचे त देब न ? कवनो अउरो राह होई जवन मनई बनाई, सबके गुंजाइश राखी, ओपर रथवो दउराई त सब बँचलो रही, बचले भर नाहीं रही ऊ सब रथ के सजवले रही, कब्बो रथ के बनावट बनि के, कब्बो रथ पर चढ़ेवाला के सोभा बनि के, कब्बो ओकरे मन के उमंग बनि के । ओकर चिन्ता अपने पंचनि नाहीं करब, खाली सिनेमा के तरह ही ब ब, खाली अपने लोटवा मे गुड़ फोरब, भोजपुरी के लेके आंदोलन करब, भोजपुरी के भीतरे कवनो नकारे वाला बा, ओकर सुर सुनबे न करब, खाली 'बलम लरिकइयाँ' के गीति गवाइब आ मने मन सोचब, भोजपुरी में बड़ा रस बा । बाति गढ़वले में का बा, एही जा बतिया समेटतानीं । राधाजी के मानव जमुना के माटी में हेराइल आ फांटो गावे वाला गवलें, 'मानिक मोर हेरइलें, एही

जमुना के मटिया ।' हमार घुंघुची त माटी में हेराइल नाहीं, ऊ त जवन बयारि बहतिया ओही में एतना चीकट धुँआ बा, गन्होर बा, एतना कउवा रोर बा, ओही में कतहूँ हेरा गइल । आपन दीदा खोईं तब त हम अँखिगर लोगन के आगे आपन दुख कहीं । कब्बो न अइसन होई कन्हइया घुंघचिया के माला पहिरे बिना बंसुरी बजावे के तइयार नाहीं होबऽ, खोजि हेरि के घुंघुची उनके गंटई में डरही के परी, ओनकर बंसुरी बाजी, हमरो चिन्हारी मिलि जाई ।

जमुना तट बेनु बजावत स्याम सुनाम हमरो हू टेरि फिरैंगे ।
एक दिन नहिं एक दिना कबहूँ दिन वे फिरि फेरि फिरैंगे ॥

❑